Shodhbodhalaya: An International Peer reviewed
Multidisciplinary Journal
Volume 4 | Issue 2 | ISSN: 2584-1807 | (https://shodhbodh.com/)

कोल एवं गोंड जनजातियों में शिक्षा के स्तर का प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन (सतना जिले के विशेष संदर्भ में)

शोध–निर्देशक

डॉ. श्रीनिवास मिश्रा

से.नि. प्राध्यापक, समाजशास्त्र विभाग

शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय अमरपाटन

जिला–मैहर (म.प्र.)

शोधार्थी

चन्दा सिंह

सारांश

भारत एक बहुजातीय एवं बहुसांस्कृतिक देश है जिसमें विभिन्न जनजातीय समुदाय निवास करते हैं। इन जनजातीय समुदायों के सामाजिक-आर्थिक विकास में शिक्षा की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। प्रस्तुत शोध पत्र सतना जिले में निवासरत कोल एवं गोंड जनजातियों में शिक्षा के स्तर के प्रभाव का तुलनात्मक विश्लेषण करता है। कोल एवं गोंड मध्यप्रदेश की दो प्रमुख अनुसूचित जनजातियाँ हैं, जिनकी सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक स्थितियाँ परस्पर भिन्न हैं। शोध में यह देखा गया है कि शिक्षा का स्तर इन जनजातियों के व्यावसायिक चुनाव, आर्थिक स्थिति, सामाजिक चेतना, स्वास्थ्य-सुरक्षा और राजनीतिक सहभागिता पर किस प्रकार प्रभाव डालता है। अध्ययन में प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के आँकड़ों का उपयोग किया गया है। शोध के निष्कर्ष प्रकट करते हैं कि शिक्षा के प्रसार के साथ दोनों जनजातियों में सकारात्मक परिवर्तन दृष्टिगोचर हो रहे हैं, परंतु कोल जनजाति की तुलना में गोंड जनजाति में शैक्षिक स्तर अपेक्षाकृत ऊँचा है। सरकारी योजनाओं के बावजूद उच्च शिक्षा में भागीदारी अभी भी सीमित है।

मुख्य शब्द: कोल जनजाति, गोंड जनजाति, शिक्षा का स्तर, सतना जिला, जनजातीय विकास, तुलनात्मक अध्ययन, सामाजिक परिवर्तन, सरकारी योजनाएँ।

1. प्रस्तावना

शिक्षा किसी भी समाज के विकास की आधारशिला होती है। यह केवल ज्ञान का माध्यम नहीं है, अपितु सामाजिक परिवर्तन, आर्थिक सशक्तिकरण और सांस्कृतिक चेतना का सशक्त उपकरण भी है। भारत में जनजातीय समुदाय सदैव विकास की मुख्यधारा से अपेक्षाकृत दूर रहे हैं। इनकी भौगोलिक स्थिति, सामाजिक संरचना एवं ऐतिहासिक कारणों से ये समुदाय शैक्षिक दृष्टि से पिछड़े रहे हैं। स्वतंत्रता के पश्चात भारत सरकार ने जनजातीय शिक्षा हेतु अनेक योजनाएँ एवं कार्यक्रम प्रारम्भ किए, जिनका प्रभाव धीरे-धीरे इन समुदायों में दिखाई देने लगा है।

मध्यप्रदेश में जनजातियों की संख्या एवं विविधता की दृष्टि से यह राज्य अत्यंत महत्वपूर्ण है। सतना जिला बाघेलखण्ड क्षेत्र का एक प्रमुख जिला है, जहाँ कोल एवं गोंड जनजातियाँ बड़ी संख्या में निवास करती हैं। कोल जनजाति मुख्यतः वन्य एवं पहाड़ी क्षेत्रों में निवास करती है, जबकि गोंड जनजाति का निवास अपेक्षाकृत समतल और अर्ध-नगरीय क्षेत्रों में भी पाया जाता है। दोनों जनजातियों की शैक्षिक स्थिति, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि एवं सामाजिक संरचना में पर्याप्त अंतर है। इस पृष्ठभूमि में दोनों जनजातियों में शिक्षा के स्तर का तुलनात्मक अध्ययन एक महत्वपूर्ण एवं सार्थक शोध-प्रयास है।

भारतीय संविधान ने अनुसूचित जनजातियों के शैक्षिक उत्थान हेतु विशेष प्रावधान किए हैं। अनुच्छेद 46 में राज्य को यह निर्देशित किया गया है कि वह अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के लोगों के शैक्षणिक और आर्थिक हितों की विशेष सावधानी से अभिवृद्धि करे। इसके अतिरिक्त पंचवर्षीय योजनाओं, एकलव्य आदर्श आवासीय विद्यालय, आश्रम शाला योजना, छात्रवृत्ति योजनाएँ एवं अनेक कार्यक्रमों के माध्यम से जनजातीय शिक्षा को प्रोत्साहित किया गया है। तथापि जमीनी स्तर पर इन योजनाओं का प्रभाव दोनों जनजातियों में एकसमान नहीं रहा है।

2. शोध पत्र का उद्देश्य

प्रस्तुत शोध पत्र के निम्नलिखित मुख्य उद्देश्य हैं। प्रथम उद्देश्य है, सतना जिले में कोल एवं गोंड जनजातियों की शैक्षिक स्थिति का वर्तमान परिदृश्य जानना। द्वितीय उद्देश्य है, शिक्षा के स्तर का दोनों जनजातियों की आर्थिक स्थिति पर पड़ने वाले प्रभाव का विश्लेषण करना। तृतीय उद्देश्य है, शिक्षा का सामाजिक चेतना,

सांस्कृतिक जीवन एवं स्वास्थ्य व्यवहार पर क्या प्रभाव पड़ रहा है, इसका तुलनात्मक मूल्यांकन करना। चतुर्थ उद्देश्य है, उच्च शिक्षा एवं व्यावसायिक शिक्षा में दोनों जनजातियों की भागीदारी की स्थिति का अध्ययन करना। पाँचवाँ उद्देश्य है, जनजातीय शिक्षा में बाधक तत्वों की पहचान करना एवं उनके समाधान हेतु सुझाव प्रस्तुत करना।

3. शोध का महत्व

जनजातीय समाज के संदर्भ में शिक्षा के स्तर का तुलनात्मक अध्ययन अनेक कारणों से महत्वपूर्ण है। सैद्धांतिक दृष्टि से यह शोध सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया, सांस्कृतिक संपर्क एवं जनजातीय विकास के समाजशास्त्रीय सिद्धांतों को जमीनी आँकड़ों से परखने का अवसर प्रदान करता है। व्यावहारिक दृष्टि से यह शोध नीति-निर्माताओं को जनजातीय शिक्षा की वास्तविक स्थिति से अवगत कराता है एवं योजनाओं की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करता है।

सतना जिले में कोल एवं गोंड जनजातियों पर आधारित तुलनात्मक अध्ययन इस क्षेत्र में पहले से उपलब्ध शोध को और समृद्ध करेगा। यह शोध शिक्षाविदों, समाजशास्त्रियों, जनजातीय कल्याण विभाग एवं स्वयंसेवी संस्थाओं के लिए उपयोगी संदर्भ सामग्री प्रस्तुत करता है। इसके अतिरिक्त, यह शोध स्थानीय समुदायों में शैक्षिक जागरूकता बढ़ाने में भी सहायक हो सकता है। समग्र रूप से यह शोध जनजातीय सशक्तिकरण की दिशा में एक सार्थक योगदान है।

4. सतना जिले में कोल एवं गोंड जनजातियों में शिक्षा के स्तर का प्रभाव — तुलनात्मक अध्ययन

4.1 कोल एवं गोंड जनजातियों का सामान्य परिचय

कोल जनजाति मध्यप्रदेश की प्रमुख अनुसूचित जनजातियों में से एक है। ये मुख्यतः विंध्य पर्वतमाला की तलहटी एवं वन्य क्षेत्रों में निवास करते हैं। सतना जिले में ये मैहर, रामपुर बाघेलान एवं उचेहरा विकास खण्डों में बड़ी संख्या में पाए जाते हैं। कोल जनजाति परंपरागत रूप से वन-उत्पादों पर निर्भर रहती है तथा इनका जीवन अत्यंत सरल एवं प्रकृति-निर्भर है। इनकी बोली 'कोलरी' है जो हिंदी और बाघेली का मिश्रित रूप है।

गोंड जनजाति मध्यप्रदेश की सबसे बड़ी जनजाति है। सतना जिले में गोंड जनजाति के लोग नागौद, अमरपाटन एवं मझगवाँ क्षेत्रों में निवास करते हैं। गोंड जनजाति ऐतिहासिक दृष्टि से एक समृद्ध एवं प्रभावशाली जनजाति रही है, जिनका अपना विशाल इतिहास एवं राज्य-व्यवस्था रही है। गोंड समाज में कृषि, पशुपालन एवं वन-आधारित आजीविका का चलन है। आधुनिकता एवं सरकारी योजनाओं के प्रभाव से इस जनजाति में शैक्षिक एवं सामाजिक परिवर्तन की गति अपेक्षाकृत तीव्र रही है।

4.2 शैक्षिक स्तर का तुलनात्मक विश्लेषण

सतना जिले में जनगणना एवं जनजातीय विभाग के आँकड़ों के अनुसार कोल जनजाति की साक्षरता दर गोंड जनजाति की तुलना में कम है। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार सतना जिले में कोल जनजाति में साक्षरता दर लगभग 44-48 प्रतिशत के मध्य रही, जबकि गोंड जनजाति में यह दर 55-60 प्रतिशत के निकट पाई गई। प्राथमिक शिक्षा में नामांकन की स्थिति दोनों जनजातियों में सुधरी है, किंतु ड्रॉपआउट दर उच्च बनी हुई है।

कोल जनजाति में बालिकाओं की शिक्षा विशेष रूप से चिंता का विषय है। बाल विवाह की प्रथा एवं आर्थिक दबाव के कारण कोल बालिकाएँ अक्सर माध्यमिक स्तर पर विद्यालय छोड़ देती हैं। गोंड जनजाति में बालिका शिक्षा की स्थिति अपेक्षाकृत बेहतर है। एकलव्य आदर्श आवासीय विद्यालयों की स्थापना एवं छात्रावास सुविधाओं के कारण गोंड जनजाति की बालिकाओं में उच्च विद्यालय स्तर तक पहुँचने की प्रवृत्ति बढ़ी है। उच्च शिक्षा में, विशेषकर स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर पर दोनों जनजातियों की भागीदारी अभी भी नगण्य है।

माध्यमिक स्तर पर दोनों जनजातियों के विद्यार्थियों के बीच व्यावसायिक और तकनीकी शिक्षा में रुचि का विकास हो रहा है, किंतु जागरूकता का अभाव, दूरी, परिवहन की कमी एवं संसाधनों की सीमितता इनके मार्ग में अवरोध उत्पन्न करती है। कोल जनजाति के युवाओं में मनरेगा एवं ठेका मज़दूरी को प्राथमिकता दिए जाने की प्रवृत्ति देखी जाती है, जबकि गोंड जनजाति के शिक्षित युवा शासकीय सेवाओं एवं अध्यापन के क्षेत्र में अपनी उपस्थिति दर्ज करा रहे हैं।

4.3 आर्थिक जीवन पर शिक्षा का प्रभाव

शिक्षा और आजीविका का सीधा संबंध है। सतना जिले में जो कोल एवं गोंड व्यक्ति प्राथमिक शिक्षा से वंचित रहे, वे मुख्यतः कृषि मज़दूरी, वन-उत्पाद संग्रह एवं असंगठित श्रम में संलग्न हैं। शिक्षित व्यक्ति अपेक्षाकृत बेहतर रोजगार प्राप्त करने में सफल रहे हैं। गोंड जनजाति में जिन परिवारों में एक भी सदस्य स्नातक स्तर तक पहुँचा है, उन परिवारों की आर्थिक स्थिति में उल्लेखनीय सुधार दर्ज किया गया है।

कोल जनजाति में शिक्षा का आर्थिक प्रभाव अभी भी सीमित है क्योंकि शिक्षित व्यक्तियों की संख्या कम है तथा स्थानीय स्तर पर रोजगार के पर्याप्त अवसर उपलब्ध नहीं हैं। कुछ शिक्षित कोल युवा शहरी क्षेत्रों में पलायन करते हैं जिससे परिवार की आय में वृद्धि होती है, परंतु इससे ग्राम स्तर पर समुदाय का नेतृत्व कमजोर होता है। सरकारी छात्रवृत्ति एवं आर्थिक सहायता योजनाओं का लाभ गोंड परिवारों द्वारा अधिक लिया जा रहा है, जिसका कारण उनकी जागरूकता एवं सामाजिक नेटवर्क का व्यापक होना है।

4.4 सामाजिक चेतना एवं सांस्कृतिक जीवन पर प्रभाव

शिक्षा के प्रभाव से दोनों जनजातियों में सामाजिक चेतना का विकास हो रहा है। पंचायती राज संस्थाओं में जनजातीय प्रतिनिधित्व बढ़ा है। गोंड जनजाति में शिक्षित महिलाएँ ग्राम पंचायत स्तर पर निर्वाचित होकर नेतृत्व की भूमिका निभा रही हैं। कोल जनजाति में यह प्रवृत्ति अभी उभर रही है। मतदान, सरकारी योजनाओं की जानकारी एवं कानूनी अधिकारों के प्रति जागरूकता में शिक्षित वर्ग अग्रणी है।

सांस्कृतिक जीवन पर शिक्षा का प्रभाव मिश्रित है। एक ओर शिक्षा ने जनजातीय युवाओं को आधुनिक जीवनशैली एवं मूल्यों से परिचित कराया है, तो दूसरी ओर पारंपरिक लोकसंस्कृति, लोकगीत, लोकनृत्य एवं हस्तशिल्प जैसी विरासत का ह्रास भी हो रहा है। कोल जनजाति में करमा एवं बिहाव जैसे त्योहार अभी भी जीवित हैं, किंतु युवा पीढ़ी की इनमें रुचि कम हो रही है। गोंड जनजाति में गोंडी भाषा एवं संस्कृति के संरक्षण के प्रति सजगता अपेक्षाकृत अधिक है और कुछ शिक्षित गोंड युवा अपनी सांस्कृतिक पहचान को बचाने के लिए सक्रिय हैं।

4.5 स्वास्थ्य एवं स्वच्छता के प्रति जागरूकता पर प्रभाव

शिक्षा और स्वास्थ्य का गहरा संबंध है। सतना जिले में यह देखा गया है कि जिन जनजातीय परिवारों में शिक्षा का स्तर अधिक है, वे स्वास्थ्य सुविधाओं का लाभ लेने में अधिक सक्षम हैं। गोंड जनजाति में शिक्षित महिलाएँ टीकाकरण, संस्थागत प्रसव एवं परिवार नियोजन के प्रति अधिक जागरूक पाई गई हैं। इसके विपरीत कोल जनजाति में अभी भी पारंपरिक झाड़-फूँक, टोने-टोटके एवं ओझा पर निर्भरता देखी जाती है।

स्वच्छ भारत मिशन के अंतर्गत शौचालय निर्माण का लाभ शिक्षित जनजातीय परिवारों ने अधिक उठाया है। गोंड बहुल बस्तियों में शौचालयों का उपयोग कोल बस्तियों की तुलना में बेहतर पाया गया। मध्यान्ह भोजन योजना एवं पोषण अभियान के प्रति जागरूकता में भी शिक्षित परिवारों की भूमिका सक्रिय रही है।

4.6 शैक्षिक बाधाएँ एवं सरकारी प्रयास

कोल एवं गोंड जनजातियों में शिक्षा के विस्तार में अनेक बाधाएँ हैं। इनमें प्रमुख हैं — निर्धनता एवं आर्थिक दबाव, विद्यालयों की दूरी एवं परिवहन का अभाव, माता-पिता की निरक्षरता, जल्दी विवाह की प्रथा, कृषि एवं मज़दूरी में बच्चों की भागीदारी, शिक्षकों की अनुपस्थिति तथा शिक्षण माध्यम की समस्या। इन बाधाओं के चलते माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक स्तर पर ड्रॉपआउट दर अत्यंत उच्च बनी हुई है।

सरकार ने इन बाधाओं को दूर करने के लिए एकलव्य आदर्श आवासीय विद्यालय, आश्रम शाला, जनजातीय उपयोजना क्षेत्रों में विशेष आवंटन, पोस्ट-मैट्रिक छात्रवृत्ति, प्री-मैट्रिक छात्रवृत्ति जैसी योजनाएँ चलाई हैं। मध्यप्रदेश में आदिम जाति कल्याण विभाग के माध्यम से जनजातीय छात्रों को कम्प्यूटर शिक्षा, व्यावसायिक प्रशिक्षण एवं उच्च शिक्षा ऋण की सुविधाएँ प्रदान की जाती हैं। इन योजनाओं का लाभ गोंड जनजाति ने अधिक लिया है क्योंकि इनके समुदाय में जागरूकता अधिक है। कोल जनजाति में इन योजनाओं के प्रति जागरूकता बढ़ाने की आवश्यकता है।

5. निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन से स्पष्ट होता है कि सतना जिले में कोल एवं गोंड जनजातियों में शिक्षा के स्तर का प्रभाव उनके सामाजिक-आर्थिक जीवन पर व्यापक रूप से पड़ रहा है। गोंड जनजाति में शिक्षा का स्तर अपेक्षाकृत ऊँचा है तथा

इसके परिणामस्वरूप इस जनजाति में आर्थिक सुधार, सामाजिक जागरूकता एवं राजनीतिक सहभागिता में वृद्धि दृष्टिगोचर होती है। कोल जनजाति में शिक्षा की स्थिति चिंताजनक बनी हुई है, जहाँ ड्रॉपआउट दर अधिक है एवं उच्च शिक्षा में भागीदारी लगभग नगण्य है।

शिक्षा के विस्तार से दोनों जनजातियों में महिला सशक्तिकरण, स्वास्थ्य जागरूकता एवं सामाजिक गतिशीलता में सुधार हो रहा है, परंतु यह प्रक्रिया धीमी है। सांस्कृतिक पहचान एवं पारंपरिक ज्ञान के संरक्षण के साथ आधुनिक शिक्षा का समन्वय दोनों जनजातियों के लिए एक महत्वपूर्ण चुनौती है। सरकारी योजनाओं के कार्यान्वयन में पारदर्शिता एवं जन-जागरूकता अभियान को और सुदृढ़ करने की आवश्यकता है।

समग्र रूप से कहा जा सकता है कि शिक्षा जनजातीय विकास का सबसे प्रभावी माध्यम है। जब तक इन समुदायों को गुणवत्तापूर्ण, सुलभ एवं प्रासंगिक शिक्षा नहीं मिलती, तब तक उनके समग्र विकास की परिकल्पना अधूरी रहेगी। दोनों जनजातियों के बीच शैक्षिक असमानता को दूर करने के लिए लक्षित एवं समुदाय-केंद्रित हस्तक्षेप आवश्यक है।

6. सुझाव

प्रस्तुत शोध के निष्कर्षों के आधार पर निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत किए जाते हैं।

कोल जनजाति बहुल क्षेत्रों में आवासीय विद्यालयों की संख्या में वृद्धि की जानी चाहिए ताकि दूरस्थ क्षेत्रों के बच्चे भी माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक शिक्षा प्राप्त कर सकें। जनजातीय भाषाओं में प्रारंभिक शिक्षा का प्रावधान किया जाना चाहिए जिससे बच्चे बिना भाषायी बाधा के शिक्षा ग्रहण कर सकें। यह विशेष रूप से कोल जनजाति के लिए महत्वपूर्ण है जहाँ 'कोलरी' बोली प्रचलित है।

जनजातीय महिला शिक्षा को प्रोत्साहन देने के लिए विशेष प्रोत्साहन राशि, साइकिल वितरण एवं सुरक्षित छात्रावास की व्यवस्था की जानी चाहिए। बाल विवाह की रोकथाम के लिए सामुदायिक जागरूकता अभियान चलाए जाने चाहिए। ग्राम पंचायत स्तर पर जनजातीय शिक्षा समितियों का गठन किया जाए जो नामांकन, उपस्थिति एवं शैक्षिक गुणवत्ता की निगरानी करें। सरकारी योजनाओं का लाभ पात्र परिवारों तक पहुँचाने के लिए जागरूकता शिविरों का आयोजन किया जाए।

उच्च शिक्षा में जनजातीय विद्यार्थियों की भागीदारी बढ़ाने के लिए कोचिंग सुविधाएँ, करियर काउंसलिंग एवं मार्गदर्शन केंद्र स्थापित किए जाने चाहिए। पारंपरिक ज्ञान एवं जनजातीय संस्कृति का पाठ्यक्रम में समावेश किया जाए ताकि जनजातीय बच्चों की सांस्कृतिक पहचान सुरक्षित रहे। व्यावसायिक एवं कौशल विकास प्रशिक्षण को स्थानीय उद्योगों एवं कृषि के साथ जोड़कर रोजगार-उन्मुख शिक्षा को प्रोत्साहित किया जाए।

7. संदर्भ ग्रन्थ

1. अग्रवाल, एस. एन. (2002). भारत में जनजातीय विकास एवं समस्याएँ. नई दिल्ली: साहित्य भण्डार।
2. उइके, एस. के. (2015). गोंड जनजाति का सामाजिक-आर्थिक अध्ययन. भोपाल: मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी।
3. कुमार, आर. (2010). जनजातीय शिक्षा और विकास. नई दिल्ली: राधा पब्लिकेशन्स।
4. खरे, वी. एस. (1998). मध्यप्रदेश की जनजातियाँ: एक परिचय. भोपाल: आदिम जाति कल्याण विभाग।
5. गुप्ता, एस. (2018). जनजातीय समाज में परिवर्तन की दिशाएँ. जयपुर: रावत पब्लिकेशन्स।
6. चौधरी, एम. के. (2007). कोल जनजाति: इतिहास, समाज और संस्कृति. इलाहाबाद: लोक भारती प्रकाशन।
7. त्रिवेदी, एच. आर. (1993). जनजातीय समाजशास्त्र. नई दिल्ली: कॉन्सेप्ट पब्लिशिंग कम्पनी।
8. दुबे, एस. सी. (1977). भारत में जनजातीय समस्याएँ. नई दिल्ली: नेशनल बुक ट्रस्ट।
9. पांडे, बी. बी. (2011). मध्यप्रदेश में जनजातीय शिक्षा की वर्तमान स्थिति. भोपाल: आदिम जाति शोध एवं प्रशिक्षण संस्थान।
10. पाठक, ए. (2014). आदिवासी जीवन और संघर्ष. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन।
11. भट्टाचार्य, एस. (2005). Tribal Education in India. New Delhi: Concept Publishing Company.

12. मिश्र, एस. (2016). बाघेलखण्ड की जनजातियाँ: सामाजिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन. रीवा: विश्वविद्यालय प्रकाशन।
13. रजनी, के. (2009). जनजातीय महिलाओं की शैक्षिक स्थिति. लखनऊ: शोध संस्थान प्रकाशन।
14. शर्मा, ए. के. (2019). आदिवासी विमर्श और शिक्षा नीति. दिल्ली: हिंदी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय।
15. सिंह, के. एस. (1993). The Scheduled Tribes. Anthropological Survey of India. New Delhi: Oxford University Press.
16. Census of India (2011). Scheduled Tribe Population Data. New Delhi: Office of the Registrar General and Census Commissioner.
17. Ministry of Tribal Affairs, Government of India (2020). Annual Report 2019-20. New Delhi: Government of India.
18. Madhya Pradesh Tribal Welfare Department (2022). Tribal Sub-Plan Report, Satna District. Bhopal: Government of Madhya Pradesh.
19. NUEPA (2021). District Report Cards – Satna. New Delhi: National University of Educational Planning and Administration.
20. SCERT, Madhya Pradesh (2018). State Report on Tribal Education. Bhopal: State Council of Educational Research and Training.